(3) शिक्षा द्वारा दार्शनिक राजा तैयार किये जाने चाहिए।

प्लेटो की शिक्षा योजना का मुख्य उद्देश्य दार्शनिक शासक तैयार करना रहा है। उसके अनुसार बालक वर्ष तक की प्राथमिक शिक्षा की अवधि में व्यायाम एवं संगीत के द्वारा शरीर और मन का विकास किया जाता है। 20 से 30 वर्ष तक विभिन्न विज्ञानों के द्वारा उसके विवेक को विकसित और आत्मचक्षु को सत्य की ओर उन्मुख किया जाता है। तीस से पैंतीस वर्ष की अवस्था के बीच द्वन्दात्मकता की शिक्षा के द्वारा उसे सर्वोच्च सत्य का ज्ञान प्राप्त होता है। परन्तु यह शिक्षा यहीं पूर्ण नहीं होती। आगामी पन्द्रह वर्ष तक अपने सद्धान्तिक ज्ञान को व्यवहारिक रूप में परिणत करने के लिए उसे संसार की पाठशाला में विचरण करना पड़ता है। इस अवधि में सोने की भाँति उसे अग्नि में तपाया जाता है जिससे भावष्य में शासक बनने पर वह भ्रष्ट और खोटा न प्रमाणित हो। इस तरह दार्शनिक शासक का निर्माण होता है।

(4) साम्यवाद - साम्यवाद प्लेटो के आदर्श राज्य का एक अन्य आधार स्तम्भ है। प्लेटो का मानना था कि शिक्षा के द्वारा नैतिक विकास कर लेने मात्र से आदर्श राज्य का निर्माण नहीं हो जायेगा क्योंकि अनेक बाह्य परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जिनका अनिष्ट कारी प्रभाव मानव के हृदय पटल पर पड़ता है। अतः साम्यवाद के द्वारा वह अनिष्टकारी प्रभाव को नष्ट कर देना चाहता है। वस्तुतः व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा परिवार दो ऐसे तत्व हैं जो राज्य को आदर्श स्थिति तक पहुँचने में अवरोध उत्पन्न करते हैं। प्लेटो इन अवरोधों को साम्यवाद द्वारा दूर करता है।

प्लेटो का साम्यवाद आदर्श राज्य की दो वर्गों - शासकों एवं सैनिकों तक ही सीमित है। अपने व्यक्तिगत सम्पत्ति एवं पारिवारिक जीवन की आहुति इन्हीं दो वर्गों को देनी थी क्योंकि आदर्श राज्य की सफलता इनकी कार्य कुशलता, क्षमता स्वार्थहीनता तथा राज्य के प्रति इनकी आस्था पर आधारित था। इनकी सेवाओं के बदले राज्य इनकी आर्थिक आवश्यकताओं - भोजन, वस्त्र, निवास आदि का सामूहिक रूप से प्रबंध करता है इस तरह प्लेटो का साम्यवाद आर्थिक न होकर राजनीतिक था।

(5) राज्य का हित सर्वोपरि - प्लेटो के आदर्श राज्य में व्यक्ति गौण था। प्लेटो का मानना था कि राज्य का सर्वोच्चता

स्थापित करके ही मानव का कल्याण किया जा सकता है।

(6) कानून का अमहत्व – प्लेटो अपने आदर्श राज्य के लिए कोई नियम, कानून निर्धारित नहीं करता, बल्कि सब कुछ दार्शनिक राजा के विवेक पर छोड़ देता है। उसका मानना था कि चूंकि राजा विवेकशील है इसलिए वह मर्यादा का उल्लंघन नहीं करेगा।

उपरोक्त विशेषताओं के बावजूद प्लेटो के आदर्श राज्य में कई दोष मौजूद थे जो निम्न थे –

(क) प्लेटो का आदर्श राज्य अव्यवहारिक एवं कल्पना प्रधान है

(ख) आदर्श राज्य व्यक्तियों को आवश्यक स्वतंत्रता प्रदान नहीं करता। नियंत्रणकारी होने के कारण उसमें व्यक्तियों की सभी प्रवृत्तियों का विकास संभव नहीं।

(ग) उत्पादक वर्ग की नितांत उपेक्षा की गयी है। शिक्षा से इस वर्ग को वंचित रखा गया है। एक तरफ प्लेटो का मानना है कि निम्न वर्ग में उत्पन्न व्यक्तियों को अपनी योग्यता के आधार पर उच्च वर्ग में सम्मिलित होने का अधिकार होना चाहिये लेकिन प्लेटो इस कार्य को सम्भव बनाने हेतु उत्पादक वर्ग के लिये समुचित शिक्षा सुविधाओं की व्यवस्था नहीं करता।

(घ) कानून की उपेक्षा की गई है और दार्शनिकों को निरंकुश सत्ता सौंप दी गई है मर्यादा वहन के नाम पर। जबकि अपनी पुस्तक लॉज में कानून की अनिवार्यता को स्वीकार किया है।

(ङ) कार्यात्मक विशेषीकरण की पद्धति अनुचित है क्योंकि इससे मानवीय व्यक्तित्व का एक विशेष पक्ष ही विकसित हो पाता है और शेष व्यक्तित्व अप्रभावित रहता है।

(च) शासन के लिये आवश्यक तत्वों की उपेक्षा – कानून, सरकारी पदाधिकारियों की व्यवस्था तथा दंड देने की व्यवस्था का कोई उल्लेख नहीं।

लेकिन जब हम आदर्श राज्य का समग्र अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि भले ही इसमें कुछ कमियाँ थीं लेकिन इस आधार पर इसकी महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। वस्तुतः राजनीतिक आदर्श वह मापदंड होता है जिसमें वर्तमान जीवन की कमियाँ को आँका जा सके। किसी भी राजनीतिज्ञ का काम मौजूदा राज्यों की जानकारी कर लेने मात्र से नहीं चल सकता। मौजूदा राज्य किस

सीमा तक श्रेष्ठ है तथ्य किस सीमा तक निष्कृष्ट है इस तथ्य का भान तभी हो सकता है जब उनको किसी आदर्श राज्य के समकक्ष खड़ा करके देखा जाये। ऐसा किये बिना किसी मौजूदा राज्य में अंशमात्र भी सुधार करने की गुंजाइश नहीं रहती। किसी आदर्श मॉडल को दृष्टिगत रख कर कदम बढ़ाने से ही राजनीतिक जीवन के निर्माण कार्य में समुचित रूप से सफलता मिलने की आशा की जा सकती है अन्यथा नहीं। इसी तथ्य को पहचान कर प्लेटो ने आदर्श राज्य का चित्रण किया है।

—०—